vinetur

अध्ययन : वाइन अंगूर की किस्में सूखे पर लगभग एक जैसी प्रतिक्रिया देती हैं

Washington State University के शोध के मुताबिक, सिंचाई के फैसले किस्म के नाम से अधिक मिट्टी की स्थिति और पर्ण-छत्र के आकार पर निर्भर हो सकते हैं

शनिवार, 14 नवंबर 2026



Washington State University के एक अध्ययन में पाया गया कि वाइन अंगूर की किस्में सूखे पर शायद किसानों की अपेक्षा से कहीं अधिक समान प्रतिक्रिया देती हैं। पानी की उपलब्धता घटने के साथ यह निष्कर्ष दाख की बारियों में सिंचाई के प्रबंधन को प्रभावित कर सकता है।

शोध में एक दाख की बारी में दो वर्षों तक अंगूर की 30 किस्मों का अध्ययन किया गया और मापा गया कि पानी कम मिलने पर बेलों की शारीरिक प्रक्रियाओं में क्या बदलाव आया। अध्ययन के अनुसार, सूखे की स्थितियों में किस्मों की प्रतिक्रियाएं मोटे तौर पर समान थीं। सूखा सहने की क्षमता के आधार पर किस्मों की स्पष्ट रैंकिंग करने लायक अंतर नहीं दिखा।

यह निष्कर्ष अंगूर की खेती से जुड़ी उस आम धारणा को चुनौती देता है जिसके तहत सिंचाई की योजना बनाते समय कुछ किस्मों को दूसरों की तुलना में अधिक सूखा-सहिष्णु माना जाता है। इसके बजाय, अध्ययन उन अन्य कारकों के महत्व की ओर इशारा करता है जो पानी की कमी में बेलों के प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं। इनमें मिट्टी की स्थिति और पौधे पर पत्तियों का कुल क्षेत्रफल, यानी पर्ण-छत्र का आकार, खास तौर पर अहम हैं।

अगर अलग-अलग स्थानों और मौसमों में भी यही रुझान दिखता है, तो सिंचाई के प्रबंधन में किस्म-आधारित सरल धारणाओं से हटकर हर दाख की बारी की विशिष्ट परिस्थितियों पर ध्यान दिया जा सकता है। किसानों के लिए इसका अर्थ होगा कि सिंचाई के फैसले केवल अंगूर की किस्म के नाम पर नहीं, बल्कि स्थानीय मिट्टी की विशेषताओं, बेलों की बढ़त और खेत में किए गए प्रत्यक्ष माप पर अधिक निर्भर होने चाहिए।

पेय उद्योग के लिए भी इस काम का व्यावहारिक महत्व है, क्योंकि पानी का उपयोग घटाने का दबाव बढ़ने के बीच वाइन उत्पादकों को अंगूर की स्थिर पैदावार और फल की गुणवत्ता बनाए रखनी होती है। सिंचाई की अधिक सटीक रणनीतियां दाख की बारियों को पानी बचाने में मदद कर सकती हैं, बिना सूखा-सहनशीलता के उन पारंपरिक वर्गीकरणों पर निर्भर हुए जो खेत में बेलों के वास्तविक व्यवहार को पूरी तरह नहीं दर्शाते। इससे सूखे इलाकों की वाइनरी की उत्पादन लागत और दीर्घकालीन योजना भी प्रभावित हो सकती है।

अध्ययन यह नहीं कहता कि अंगूर की सभी किस्में हर लिहाज से एक जैसी हैं। इसके बजाय, रिपोर्ट किए गए नतीजे बताते हैं कि इस दाख की बारी में, दो वर्षों की अवलोकन अवधि के दौरान, सूखे पर शारीरिक प्रतिक्रियाएं इतनी समान थीं कि किस्मों के व्यापक वर्गीकरण पर सवाल उठते हैं। इससे चर्चा में उस स्थान और दाख की बारी के प्रबंधन का महत्व बढ़ जाता है।

तापमान बढ़ने और बारिश के अधिक अनियमित होने से खेती प्रभावित हो रही है, ऐसे में अंगूर उत्पादन के शोधकर्ता इस बात पर तेजी से ध्यान दे रहे हैं कि बेलें पानी की कमी से कैसे निपटती हैं। इस संदर्भ में, मिट्टी और पर्ण-छत्र के आकार के महत्व को रेखांकित करने वाले निष्कर्ष किसानों को सिंचाई में बदलाव के अधिक प्रत्यक्ष उपाय दे सकते हैं। मिट्टी का प्रकार तय करता है कि जड़ों को कितना पानी उपलब्ध होगा, जबकि पत्तियों का क्षेत्रफल वाष्पोत्सर्जन के जरिए पौधे द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले पानी की मात्रा को प्रभावित करता है।

दाख की बारी के प्रबंधकों के लिए व्यावहारिक संदेश यह है कि सूखे पर बेलों की प्रतिक्रिया उतनी ही आसपास की परिस्थितियों से तय हो सकती है जितनी कतारों में लगाई गई किस्म से। इससे सिंचाई की अधिक लक्षित योजनाएं बन सकती हैं। इनमें हर खंड की मिट्टी के अंतर और पर्ण-छत्र के प्रबंधन के आधार पर फैसले करना शामिल है, न कि यह व्यापक धारणा कि एक किस्म को हमेशा दूसरी से कम पानी की जरूरत होगी।

यह अध्ययन वाइन अंगूर के उत्पादन में जल प्रबंधन को बेहतर बनाने के बढ़ते प्रयासों में योगदान देता है। कृषि पर दक्षता बढ़ाने का दबाव है। वाइन बाजार के लिए अंगूर उगाने वाले किसानों के लिए शोध का संकेत है कि पानी की अधिक बचत, किस्मों की सूखा-सहिष्णुता को लेकर लंबे समय से चली आ रही धारणाओं पर मुख्य रूप से निर्भर रहने के बजाय, हर दाख की बारी की मिट्टी और बेलों की बढ़त के पैटर्न को विस्तार से समझने से हो सकती है।